By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-10

Topic - Fascism

Class - B.A. Degree - III (Hons., P-VIII D)

Subject - Political science

Date - 12 August, 2020

By Rahul Kumar Jha.

फासीवाद :-

अन्तर्राष्ट्रीयता का विरोध :- फासीवादी राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक है। उनका जातीय श्रेष्ठता में गहरा विश्वास है। हिटलर ने जर्मन जाति को विश्व की श्रेष्ठ जाति मानकर यहूदियों पर अमानवीय अत्याचार किए और मुसोलिनी ने भी गैर-इटली की जातियों को कुचल दिया। उनका विश्वास था कि एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से कोई मेल नहीं है। प्रभुसत्ता राष्ट्र के पास होती है, राष्ट्रों के समूह के पास नहीं।

मुसोलिनी ने कहा है - "अन्तर्राष्ट्रीय शांति या व्यवस्था की बात केवल वही राष्ट्र करते हैं जो अन्य राष्ट्रों के साथ संघर्ष और प्रतियोगिता में असफल रहते हैं।" फासीवादियों की दृष्टि में स्वराष्ट्र हित सर्वोपरि है। वे इस परम साध्य के लिए कोई भी सीमा लांघ सकते हैं। मुसोलिनी ने उग्र राष्ट्रवाद को महत्व देकर अंतर्राष्ट्रीय शांति को भंग किया था और इसी कारण द्वितीय विश्व युद्ध हुआ था।

(13) परम्परावाद का समर्थन :— फासीवादी इतिहास व परम्परा को बहुत महत्व देते हैं। मुसोलिनी ने सत्ता प्राप्त करने के बाद लोगों को कहा कि "इटली गौरवपूर्ण परम्पराओं वाला देश है। हमें इसे फिर से खोई हुई

अन्तर्राष्ट्रीय 'प्रतिष्ठा दिलाती है।" उसका विश्वास था कि अतीत का गौरवपूर्ण गुणगान करके ही लोगों की एवं मंच पर सेवादित किया जा सकता है और शासन सत्ता को न्यायिक प्रदान किया जा सकता है।

यहीं कारण है कि मुसोलिनी ने परम्पराओं का गुणगान किया और इटली के गौरवमयी इतिहास से इटली की जनता को अवगत कराया। परम्पराओं का गुणगान करने से जनमानस में सकारात्मक छवि स्थापित करने में सहायता मिलती है। इससे जनता का ~~समर्थक~~ समर्थन स्वतः प्राप्त हो जाता है। इसी तरह हिटलर ने जर्मनी में जर्मन नीति के गौरवपूर्ण इतिहास का वास्ता दिलाकर विकास करने का आगाज किया।

CHAPTER CONTINUES---